मिठास पर संकट से कारोबार में आई खटास

मयंक मिश्रा

अवतार प्रीतम मोटर्स के 80 वर्षीय मालिक अपने कारोबार के अलावा किसी भी चीज के बारे में बात नहीं करना चाहते हैं। वह जवाहरलाल नेहरू के रफी अहमद किदवई से रिश्ते, उद्योगपति केशव महिंद्रा के साथ अपने ताल्लुकात और ऑटोमोबाइल कारोबार में वह कैसे आए इसके बारे में काफी विस्तार से बातचीत करते हैं। करीब एक घंटे के लंबे संवाद के बाद वह कहते हैं, 'मैं जानता हूं आपको दिल्ली जाना है। अगर आप पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कारोबारी माहौल के बारे में कुछ लिखना चाहते हैं तो मेरे पास वक्त लेकर आइए मैं आपको जानकारी दूंगा।' उनके उत्तर प्रदेश के चीनी के गढ़ मुजफ्फरनगर, शामली और बड़ौत में महिंद्रा ट्रैक्टर के तीन शोरूम हैं। वह कारोबार के बारे में बात करने से इसलिए भी हिचकते हैं क्योंकि नजदीक में ही मारुति शोरूम है।

लेकिन बातचीत के कुछ मिनट बाद ही किसी को भी यह अंदाजा हो सकता है कि हालात सामान्य हैं। हालांकि वाहन बिक्री में काफी गिरावट आई है। धनतेरस के मौके पर बुक की गई गाड़ियों की डिलिवरी लोग रद्द करवा रहे हैं। हालांकि बैंक वाहन ऋण देने के लिए तैयार हैं लेकिन लोग दिलचस्पी नहीं दिखा रहे हैं क्योंकि वे डाउन-पेमेंट के लिए जरूरी रकम का इंतजाम नहीं कर सकते हैं।

बड़ौत शहर से कुछ किलोमीटर की दूर ब्रह्मा ब्रिक फील्ड के एक अधिकारी यह स्वीकार करते हैं कि उनका कारोबार मुश्किल दौर से गुजर रहा है। ईंट कारोबार से जुड़े मनोज कहते हैं, 'पिछले साल हमने 40 लाख ईंटों की बिक्री की है। इस साल हमने कीमतों में 20 फीसदी कटौती करने के बावजूद 30 फीसदी कम बिक्री की। हमें अभी यह अंदाजा नहीं है कि हम अगले साल के लिए क्या योजना बनाएं और उन 500 कामगारों के साथ क्या करें जो हमारे लिए चार से छह महीने तक काम करते हैं।'

वाहन और भवन निर्माण कार्य से जुड़े सामानों की मांग में कमी की वजह इस क्षेत्र के चीनी कारोबार की अस्थिरता है। कभी यह क्षेत्र उत्तर प्रदेश का चीनी का कटोरा कहा जाता था। बागपत के सुभानपुर गांव के किसान एस एस त्यागी का कहना है, 'कारोबार की किस्मत इस क्षेत्र के चीनी उद्योग से जुड़ी है। अगर किसानों को गन्ने की कीमत नहीं मिलती है तो शादियां टल जाती हैं, कॉलेज और स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों को पैसे भेजने में देरी होती है।' ऐसा दावा किया जाता है कि चीनी संकट की वजह से कुछ लोगों की जान भी गई है। अक्टूबर के आखिर में बिजनौर के शाहपुर धामेदी गांव के एक किसान ने आत्महत्या कर ली क्योंकि वह 1.8 लाख रुपये के कर्ज का भुगतान करने में सक्षम नहीं था। ऐसा करने वाले वह आठवें किसान हैं।

किसानों का कहना है कि गन्ने की बढ़ती बकाया राशि भी एक ऐसी समस्या है जिसका सामना वे कर रहे हैं। मिलें छोटी किस्तों में बकाया रकम का भुगतान करती हैं। नांगला गांव के एक किसान अजब सिंह का कहना है, 'अगर आपको आपका वेतन एक साल बाद मिलता है और उसका छोटा हिस्सा आपको मिले तो इससे कोई उद्देश्य पूरा हो सकता है?' वह कहते हैं कि इनपुट लागत में काफी बढ़ोतरी हुई है। गन्ने के लिए किसानों को जो कीमत मिलती है वह पिछले तीन सालों से स्थिर ही है। इंडियन शुगर मिल्स एसोसिएशन के मुताबिक 17 नवंबर तक उत्तर प्रदेश में बकाया राशि 1,675 करोड़ रुपये थी। इस महीने की शुरुआत में राज्य सरकार ने गन्ने की राज्य सलाहकारी कीमत (सामान्य किस्म) 280 रुपये प्रति क्विंटल तय की थी। इसने शुगर मिल्स के लिए पहले के 14 दिनों के भीतर किसानों को 240 रुपये प्रति क्विंटल का भुगतान करना अनिवार्य किया है। फिलहाल किसानों के लिए सबसे बड़ी चिंता यह है कि नए पेराई सीजन की शुरुआत में काफी देरी आई है। उत्तर प्रदेश में 95 निजी और 23 लघु सहकारी मिलें हैं और इनमें से ज्यादातर पश्चिमी हिस्से में हैं। अजब सिंह का कहना है, 'पहले से ही एक महीने की देरी हो चुकी है। मैं यह नहीं जानता हूं कि हमारी गन्ने की फ़सल का क्या होगा। अगर देरी होगी तो गेहूं की फसल पर नकारात्मक असर पड़ेगा।' कुछ किसानों ने स्थानीय कारोबारियों के लिए 170-190 रुपये प्रति क्विंटल के आधार पर गन्ने की बिक्री शुरू की है। स्थानीय कारोबारी इस जिंस का इस्तेमाल गुड़ बनाने के लिए करते हैं।

मेरठ की कंपनी ए2जेड के मुख्य कार्याधिकारी परमिंदर तेवतिया कहते हैं, 'इस क्षेत्र में नकदी की काफी दिक्कत है। बैंकों ने किसानों को कर्ज देना लगभग बंद कर दिया है ऐसे में उन्हें ज्यादा ब्याज दरों पर दूसरी जगह से कर्ज लेना पड़ रहा है।'

Business Standard

6/12/14